BOXER REVOLT
बॉक्सर विद्रोह

बॉक्सर विद्रोह चीनी जनता के उस असन्तोष का नतीजा था जो दरअसल अफीम युद्ध के बाद से ही आरम्भ हो गया था। शोषण का एक लम्बा चक्र जो उन्होंने देखा वह समय बीतने के साथ बढ़ता ही गया। हालांकी खुले द्वार की नीति या फिर सौ दिवसीय सुधार जैसी गतिविधियाँ समय समय पर देखने को मिलती रही और ऐसा लगा कि इससे चीन में सुधार होगा चीनी जनता की स्थिति में परिवर्तन आयेगा मगर यह केवल एक छलावा बनकर रह गया। चीनियों का शोषण उसी प्रकार होता रहा। विदेशियों द्वारा चीनियों के लूटखसोट में कोई कमी नहीं आई। जिसका नतीजा एक उग्र विरोध के रूप में सामने आया अब बहुत सारी गुप्त समितियाँ बनने लगी जिन्होंने अपने स्तर से इन विदेशियों को बाहर निकालने का बेड़ा उठाया। इसमें सर्वाधिक मजबूत दल के रूप में जो सामने आया वह बॉक्सर दल या मुक्के बाजों का दल था।

बाक्सर विद्रोह के कारण:— ① जिस प्रकार विदेशी शक्तियाँ अपने अपने हित के लिए चीन के विशाल प्रदेश का बन्दरबाँट कर रही थी इससे चीनियों में भरकर विदेश की ज्वाला का प्रज्वलित होना स्वभाविक था। जिसने बाद में चलकर एक आन्दोलन का रुप धारण कर लिया। वह चीनी बटवारे को अपना बड़ा अपमान मानते थे इसलिए अब उन्होंने किसी भी तरह से इन विदेशीयों को निकालने की ठान ली।

② रेलमार्ग निर्माण तथा खानों के खोदे जाने की समस्या ने भी इस विद्रोह के होने में एक बड़ी भूमिका निभाई। चीनी सरकार ने 1898 ई. में विदेशी राष्ट्रों के बढ़ते हुए प्रभुत्व को कम करने के लिए एक आदेश जारी किया था जिसके अनुसार रेलमार्ग निर्माण की स्वीकृति में खानों को खोदने और उससे माल निकालने की अनुमति नहीं दी गई थी। इस लिए अब एक नवीन आदेश के द्वारा चीनी सरकार ने यह

घोषणा की कि यदि विदेशी राज्यों को कोई नया ऋण देना अनिवार्य हुआ तो उसमें आधा धन चीनियों के प्राप्त होगा। और उस कार्य का प्रबन्ध भी चीनियों के हाथ में होगा। किन्तु इसका कुछ अधिक लाभ देखने को नहीं मिला

(3) सरकारी असफलता के कारण आम चीनी जनता में पश्चिमी देशों के प्रति आक्रोश निरन्तर बढ़ता चला जा रहा था। दूसरी ओर चीनी लोग द्वारा जब भी पश्चिमी देशों की सम्पत्ति को क्षति पहुँचाई जाती थी तो उसकी क्षतिपूर्ति चीनी सरकार को देनी पड़ती थी और फिर सरकार इस अतिरिक्त बोझ को कम करने के लिए जनता पर और अधिक कर लगा देती थी। इस प्रकार असन्तोष में लगातार वृद्धि होती जा रही थी।

(4) ईसाई धर्म प्रचारक चीनियों के धार्मिक या सामाजिक उत्सवों में न तो कोई सहयोग देते थे और न ही उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते थे जिससे चीनियों को बड़ा बुरा लगता था और वे इसे अपने धर्म का अपमान मानते थे।

(5) चीन के अनेक देश भक्त किसी भी तरह से इन ईसाइयों को अपने देश से बाहर निकालना चाहते थे और इस कार्य के लिए लगातार ऐसी संस्थाएँ स्थापित होती जा रही थीं जो विदेशियों की कट्टर विरोधी थीं। इसी में से एक संस्था थी जिसका नाम था ई-हो-चुआन (पवित्र और संगठित मुक्केबाज समाज) इसे ही बॉक्सर संस्था के नाम से भी जाना जाता था। उसका मुख्य नारा था "विदेशियों का नाश करो"। हालांकि ये संस्था आरम्भ में मंचू शासन के भी विरुद्ध थी और मंचू शासन का अन्त चाहती थी किन्तु फिर बाद में उसने मंचू शासन का विरोध छोड़ दिया और विदेशियों को निकालने के लिए कटिबद्ध हो गयी।

बाक्सर विद्रोह का प्रारम्भ :- बाक्सर दल की शक्ति में तीव्र गति से वृद्धि होने लगी और उसे दूसरे दलों का भी समर्थन प्राप्त होने लगा। इसलिये हम यह कह सकते हैं कि ये एक सम्मिलित प्रयास था। विद्रोह की शुरुआत 1899 ई. में शातुंग प्रान्त से हुई। इसी बीच रानी त्जूशी का समर्थन भी बॉक्सर विद्रोहियों को प्राप्त होने लगा था और इनके प्रोत्साहन से उत्साहित होकर बाक्सर विद्रोहियों ने पीकिंग में विदेशी ठिकाने व दूतावासों पर हमले आरम्भ कर दिये थे। ईसाई पादरियों पर आक्रमण होने लगे थे। चीनी पदाधिकारियों के प्रोत्साहन पर विद्रोहियों ने रेल मार्गों को नष्ट करना आरम्भ कर दिया था। चर्च को जलाया जाने लगा था। यातायात के अन्य साधनों को भी क्षति पहुँचाई जाने लगी थी। 1900 ई. में विद्रोहियों का जोर पीकिंग में काफी बढ़ गया। टीनटसीन से आयी सैन्य टुकड़ी को भी इन्होंने मार भगाया। रानी त्जूसी का प्रोत्साहन पाकर बाक्सर विद्रोहियों की गतिविधियों में और भी तेजी आयी और उन्होंने अनेक ईसाइयों की सामूहिक हत्याएँ की। अब विदेशियों के सिर काटकर लाने वाले को पुरस्कृत किया जाने लगा। दुतावासों पर भी हमले आरम्भ हो गये। इसी बीच एक जापानी राजनयिक की हत्या कर दी गयी। बाक्सर विद्रोहियों को चीनी सरकार का पूरा समर्थन प्राप्त था। अब चीनी सरकार ने विदेशियों को यह चेतावनी दी कि वे 24 घण्टे के अन्दर चीन से बाहर चले जायें। इसी बीच एक चीनी सैनिक द्वारा जर्मन राजदूत बैरन केटलर की हत्या कर दी गयी। इन लगातार आक्रमणों से विदेशी अत्यंत भयभीत हो गये और इस बीच रानी त्जूशी खुल कर विदेशियों के विरुद्ध सामने आगयी क्योंकि उसे विश्वास होगया कि बाक्सर विद्रोही अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल हो जायेंगे।

विद्रोह का दमन :- स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अपने राजदूतों की सलाह पर विभिन्न विदेशी शक्तियों

ने चीन में अपने नौसैनिक बेड़े भेजना आरम्भ कर दिये। अब ब्रिटेन, जापान, अमेरिका व रुस ने एक संयुक्त सेना गठित की जिसने शीघ्र ही उन किलों पर अधिकार कर लिया जो टीन्टसीन तक पहुँचने वाली नदी पर नियन्त्रण रखते थे। उन्होंने चीन के समुद्र तट पर गोले बरसा कर अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया इसके उपरान्त टीन्टसीन पर विजय प्राप्त करली इसके बाद विदेशी सेना चीनी राजधानी पीकिंग की ओर बढ़ने लगी और देखते ही देखते उस पर भी अधिकार कर लिया। इसके बाद वहाँ न केवल अपने दूतावास को आग्नि कराया बल्कि पीकिंग में जम कर लूटमार की और बड़ी संख्या में चीनी सैनिकों की हत्याएँ की। रानी त्जूशी ने भाग कर जेहोल में शरण ली। इस प्रकार हम पाते हैं कि बाक्सर विद्रोह इस तरह कुचल दिया गया।

हालांकि जीस तीव्र गति से बाक्सर विद्रोहियों को सफलता प्राप्त हुई थी ठीक उसी गति से इनका पतन भी हो गया। देखा जाय तो कारण कई था। पहला कारण जो था वह था जनता में एकता का आभाव जिस कारण विद्रोहियों को जन सहयोग नहीं मिल पाया। साथ ही चीन के विभिन्न पदाधिकारियों ने भी विद्रोहियों का सहयोग करने के स्थान पर विदेशियों का साथ दिया मंचू शासक भी अवसरवादी सिद्ध हुए। बॉक्सर विद्रोहियों की हार को देखते हुए केवल अपनी सत्ता को बचाने के लिए उन्होंने अब विदेशियों का साथ देना आरम्भ कर दिया।

बाक्सर की सन्धि :- बाक्सर विद्रोह की असफलता ने एक बार फिर चीन को विघटन के कगार पर ला दिया बाद में विवश होकर चीन को इन विदेशी शक्तियों के साथ एक समझौता करना पड़ा। यह समझौता 7 सितम्बर 1901 ई० को चीन और 11 देशों के बीच किया गया। इस समझौते को इतिहास में बाक्सर प्रोटोकोल के नाम से जाना जाता है। इस समझौते की शर्तें इस प्रकार थी।

1. चीन ने बाक्सर विद्रोह की क्षतिपूर्ति के रूप में 45 करोड़ ताएल अदा करने का वचन दिया। चीनी सरकार ने जमानत के रूप में नमक कर एवं सीमा शुल्क पर से अपना अधिकार त्याग दिया। क्षतिपूर्ति की इस राशि को 11 देशों में बाँटा जाना था।
2. चीन ने जापान व जर्मनी से विशेष रूप से माफी मांगी और उनके राजनयिकों की हत्या के स्थानों पर उनके स्मारक बनाए जाने की बात स्वीकार की।
3. पीकिंग के दुतावास की सुरक्षा के लिए विदेशी सेना स्थायी रूप से रखे जाने की बात स्वीकार की
4. ताकू की किलेबन्दी हटाने का निश्चय किया गया।
5. विदेशियों के जिस कब्रिस्तान को बाक्सर विद्रोहियों ने नष्ट कर दिया था उसकी मरम्मत कराने की बात चीनी सरकार ने स्वीकार की।
6. जिन नगरों में विद्रोह हुआ था उन नगरों के छात्रों को पांच वर्षों के लिए प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने से वंचित कर दिया गया।
7. चीन द्वारा बाक्सर विद्रोहियों एवं सहयोगी अधिकारियों को दण्डित करने का वचन दिया गया।
8. पीकिंग में विदेशी दूतावासों की रक्षा के लिए स्थायी विदेशी सेना तैनात करने की बात कही गयी।
9. विदेश से शास्त्रों का आयात व देश में उनका निर्माण दो वर्ष तक न किए जाने की शर्त रखी गई।
10. सीमा शुल्क की दरों में 5% की वृद्धि की गई ताकि इससे क्षतिपूर्ति की राशि शीघ्र प्राप्त की जा सके।
11. मुकदेन एवं शांतुग में विदेशियो के व्यापार व निवास करने की अनुमति दी गयी।
12. व्यापारिक संधियों में समय समय पर परिवर्तन करने की बात कही गयी
13. अब प्रान्तिय अधिकारियों को ये आदेश दिया गया कि वे विद्रोही तत्वों पर कड़ी नजर रखें ताकि फिर से कोई विद्रोह न हो।

1902 ई० में चीन और रुस के बीच एक और संधि हुई जिसके तहत यह निश्चय किया गया कि यदि इस बीच कोई संघर्ष नहीं हुआ तो सितम्बर 1903 ई० तक रुस मंचूरिया से अपनी सेनाओं को धीरे धीरे हटा लेगा किन्तु बाद में रुस अपने इस वायदे से मुकर गया।

बाक्सर विद्रोह के परिणाम :— बाक्सर विद्रोह चीनियों द्वारा किया गया एक और असफल विद्रोह था। जिसके परिणाम बड़े विनाशकारी सिद्ध हुए। अब पीकिंग, टीन्टसिन ताकु एवं अन्य सामरिक महत्व के स्थानों पर विदेशी लोगों का आधिपत्य हो गया और चीन में हर ओर इनकी शक्ति का बोल बाला होगया। अब ये विजेता देश चीन के साथ एक औपनिवेश देश जैसा व्यवहार करने लगे। ये विदेशी शक्तियाँ अब चीन के आन्तरिक मामले में भी हस्तक्षेप करने लगी और लगातार अपनी शर्तें मनवाने का कार्य करती रही। जिससे चीन की स्थिति असहाय होगई। इस स्थिति से चीन के राष्ट्रवादी दल बड़े चिंतित होगये थे।

चीन के ऊपर क्षतिपूर्ति की अत्यधिक धनराशि विदेशी शक्तियों द्वारा लाद दी गयी थी जिसकी अदायगी चीन के सामार्थ्य से बाहर थी। परिणाम यह हुआ कि इससे चीन की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी। नमक कर व सीमा शुल्क की वसूली पर से नियंत्रण हट जाने के कारण चीन के राजकोष पर अत्यधिक भार पड़ने लगा।

यही बात मंचू वंश के पतन का कारण भी बनी और चीनवासियों को इस बात का अच्छी तरह अनुभव हो गया कि मंचू राजवंश चीनियों को इस स्थिति से बाहर निकाल पाने में एकदम नाकाम है और सत्ता परिवर्तन अति आवश्यक है। दरअसल देखा जाये तो 1911 ई० की गणतान्त्रिक क्रान्ति के लिए इस विद्रोह ने मार्ग प्रशस्त कर दिया। मंचू शासकों ने हालांकि जनता के असन्तोष को समाप्त करने के लिए सुधार लाने का प्रयास किया परन्तु ये सुधार मंचू वंश के पतन को रोक पाने में पूरी तरह असफल साबित हुए।

— X —